International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 4, July-August, 2022, Impact Factor: 7.326

महिलाओं की शिक्षा के विकास में एक क्रांतिकारी सुधारक ज्योतिराव फुले का योगदान

डॉ. मनजीत कुमार

सहायक प्रोफेसर, राजनीति विभाग, लोक प्रशासन विभाग, बाबा मस्तनाथ यूनिवर्सिटी, रोहतक (हरियाणा)

सारांशः

प्रस्तुत शोध पत्र में महिलाओं की शिक्षा के विकास में ज्योतिराव फुले के योगदान का वर्णन किया गया है। शिक्षा विशेष रूप से आर्थिक सशक्तिकरण का बीमा है जिसका प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष सम्बन्ध महिलाओं की स्वतंत्रता सामाजिक स्तर को सुदृढ़ करने से होता है। महात्मा ज्योतिराव फुले ने महिलाओं को शिक्षित बनाने के लिए अथक प्रयास किये तथा उनके अधिकार दिलवाये जिनसे उन्हें अब तक वंचित रखा गया था। भारतीय इतिहास में जो ज्योतिराव फुले ने महिलाओं के लिए किया है उनको कभी भुलाया नहीं जा सकता है।महिलाओं के अधिकारों को पहचानने व उन अधिकारों की लड़ाई में उनका साथ दिया। उनके इन प्रयासों ने उनको एक क्रांतिकारी समाज सुधारक का दर्जा प्रदान किया गया।

सार तत्वः– शिक्षा विकास, सामाजिक सम्मान, सर्वांगीण विकास, बाल विवाह, भेदभाव।

भूमिका :–

शिक्षा एक ऐसा साधन है जो मानव को प्राणी जगत के अन्य जीवों से पृथक करती है। शिक्षा का मानव जीवन में काफी महत्व है। शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान है। शिक्षा मानव को एक सामाजिक प्राणी बनाकर सांस्कृतिक धरोहर को आगे आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करने के काबिल बनाती है। शिक्षा से ही मानव का सर्वांगीण विकास होता है। मानव अपना व्यक्तित्व जीवन सुखराम बनाता है और सामाजिक जीवन में अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्र के विकास में योगदान देता है।[1] शिक्षा शब्द संस्कृत की 'शिक्षा' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'सीखना' और सिखाना' शिक्षा शब्द से दोनों ही भाव निहित है। प्रारम्भ में शिक्षा का अर्थ केवल विभिन्न प्रकार की जानकारियां प्राप्त करना था। इससे शिक्षा का अर्थ सीमित हो जाता है शिक्षा में ज्ञान के अतिरिक्त भावात्मक विकास, कौशल प्राप्ति के साथ–साथ सर्वांगीण विकास को भी प्राप्त किया जाता है। सभी को शिक्षित होना बहुत जरूरी है और विशेष कर महिलाओं को।

शिक्षा के माध्यम से जागरूकता, कार्यशीलता, बुहत्तर नियंत्रण के लिए, प्रयास के द्वारा महिलाएं अपने विषय में निर्णय लेने के लिए समर्थ एवं स्वतंत्र होती है।

वेदों में नारी की शिक्षा, शील, गुण, कर्त्तव्य और अधिकारों का विशुद्व वर्णन है। इस प्रकार का वर्णन सम्भवतः संसार के किसी भी धर्मग्तन्श में नहीं है। चारों वेदों में सैकड़ों नारी विषयक मंत्र दिये गए है जिनमें स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में नारी समाज में विशेष स्थान था तथा पुरूषों की भांति उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में बराबर का स्थान प्राप्त था। वैदिक काल में भारतीय नारी को पुरूषों की भांति शिक्षा का अधिकार प्राप्त था बौद्व धर्म और जैन धर्म ने भी स्त्री शिक्षा का समर्थन किया।

साहित्य समीक्षाः– जगपति मुरलीधर (1993) ने प्रस्तुत पुस्तक में ''युगपुरूष महात्मा फुले' में ज्योतिराव फुले द्वारा किए गये सामाजिक कार्यों के बारे में बताया है कि वे एक महान समाज सुधारक थे। इन्होंने सबसे ज्यादा स्त्री षिक्षा पर बल दिया। (**कुमार राधा (2009)** प्रस्तुत पुस्तक ''स्त्री संघर्ष का इतिहास'' में स्त्री के जीवन की कठिनाइयों का वर्णन किया है।)

नरके, हरी (1993) द्वारा लिखित ''महात्मा फुले : साहित्य और विचार'' पुस्तक में महात्मा फुले के बारे में बताया गया है िकवे 19वीं शताब्दी के समाज सुधारक थे। उस समय देश में अनेक सामाजिक तथा धार्मिक कुरीतियाँ फैली हुई थी। इन सब कुरीतियों की जिम्मेदार तत्कालीन सामाजिक व धार्मिक दशा थी।

शाह, एम0बी0(1998) ने अपनी पुस्तक ''सामाजिक क्रांति के जनकः महात्मा ज्योतिराव फुले'' लेखक बताते है कि भारत में सामाजिक परिवर्तन की लड़ाई के अगुवा है। अपने विचारों और कार्यों की बदौलत उन्होंने दलित वंचित समाज को वर्ण–व्यवस्था के भेदभावकारी व शोषणकारी चंगुल से आजादी के लिए संघर्ष का नेतृत्व किया।

कोर धनजंय (1995) प्रस्तुत पुस्तक ''महात्मा ज्योतिराव फुलेः दी फादर ऑफ इण्डियन सोशल रेवोल्यूशन, में बताया गया है कि महात्मा ज्योतिबा फुले ने वर्ण, जाति और वर्ग व्यवस्था में निहित शोषण–प्रक्रिया को एक–दूसरे का पूरक बताया है उनका कहना था कि राजसत्ता और ब्राह्मण आधिपत्य के तहत धर्मवादी सत्ता आपस में सांठ–गांठ कर इस सामाजिक व्यवस्था और मशीनरी का उपयोग करती है।

अध्ययन के उद्देश्यः–महिलाओं की शिक्षा के विकास में ज्योतिराव फुले का योगदान।

शोध पद्वतिः–वर्तमान शोध अध्ययन वर्णनात्मक, ऐतिहासिक तथा विशलेषणात्मक है। इस अध्ययन के लिए सामग्री को बहुत ही सावधानिक पूर्वक एकत्रित किया गया है। जो द्वितीय स्त्रोत पर आधारित है। विषय से सम्बंधित पुस्तकों विभिन्न विद्वानों के लेखों, राजनीतिक जर्नलों, नवीनतम अध्ययन की सहायता ली गई है।

अध्ययन की सीमाएंः–प्रस्तुत शोध प्रबंध महात्मा ज्योतिराव फुले जी की मृत्यु के कई दशकों बाद किए जाने के कारण स्वयं ज्योतिराव फुले जी के दर्शनों एवं साक्षात्कार के बिना यह अध्ययन केवल उनके भाषणों , लेखों, कार्यों एवं पुस्तकों तथा सम्बन्धित विषय पर अन्य लेखकों के विचारों पर आधारित है।

महिलाओं की शिक्षा में योगदानः–ऋग्वेदिक काल में स्त्रियों को अनेक अधिकार मिले हुए थे। उस समय बिना भेद भाव के सभी को शिक्षा दी जाती थी। वैदिक काल मे पति–पत्नी दोनों वैदिक संस्कारों में भाग लेते थे। पत्नी के बिना कोई भी कार्य पूर्ण नहीं माना जाता था। उस समय अनेक स्त्रियां शिक्षा ग्रहण करती थी। बौद्व काल में स्त्रियों को मठों में जाने की अनुमति दी गई। परंतु मध्य में स्त्री शिक्षा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। नारी की स्थिति गुलामों से भी बुरी थी। मनु स्मृति में तो यहां तक लिखा है कि नारी को कभी स्वतंत्र नहीं छोड़ना चाहिए। मनु कहता है कि बल्यावस्था में नारी को पिता के अधीन, यौवनावस्था में पति के अधीन, पति की मृत्यु के बाद पुत्र के अधीन रहना पड़ता है। लेकिन जैसे–जैसे समय व्यतीत होता गया नारी की स्थिति में भी परिवर्तन होता गया तथा नारी को समाज में सम्मानजनक

स्थान मिलता गया। प्रत्येक युग में सामाजिक परिवर्तन होते है। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, क्रांतियां होती है। उनको दिशा देने के लिए युगपुरूष अपने विचारों की आहुति देते है। ये महापुरूष अपने समय की चिंतनधारा पर भी प्रभाव छोड़ते है।

नारी शिक्षा के उत्थान में ज्योतिबा फुले का नाम प्रमुखता से आता है। महात्मा फुले को 19वीं शताब्दी के समाज सुधारकों में अग्रणी माना जाता है। भारतीय इतिहास में 19वीं सदी का समय अधोगति का समय था उस समय देश में अनेक सामाजिक तथा धार्मिक कुरीतियां फैली हुई थी। इसके अलावा दुर्दशा का एक अन्य कारण शिक्षा का अभाव भी था। ज्योतिबा फुले का मानना था कि जब प्रकृति ने सभी को एक समान बनाया है तो नारी के साथ भेदभाव क्यों? उन्होंने नारी शिक्षा का जोरदार समर्थन किया तथा उन्होंने शिक्षा के अधिकार दिलाने का पुरजोर प्रयास किया।

महात्मा ज्योतिराव फुले ने न केवल स्त्रियों के सामाजिक स्तर को सुधारने पर बल दिया, अपितु स्त्री शिक्षा का जोरदार समर्थन किया। नारी उत्थान में उनका साथ उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले ने दिया। उनका मानना था कि समाज में नारी की दयनीय दशा का मूल कारण उनका अशिक्षित होना ही था।

सन् 1848 में भिंडेवाला (पूना) में उन्होंने निम्न जाति की छात्राओं के लिए कन्या विद्यालय का शुभारम्भ किया तो पता था कि उनको समाज के ठेकेदारों से लड़ना अवश्य पड़ेगा। फुले को इस बात का आभास था कि वह अकेला कुछ नहीं कर सकता और न ही उसके पास पर्याप्त साधन है। इस काम में अग्रेंजी सरकार ने उनका भरपूर सहयोग दिया और लड़कियों के स्कूल चलाने में सहायता प्रदान की। इस काम में उनका साथ उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने दिया।1847 में मिसेज मिचेल के ''नार्मल स्कूल'' में अध्यापिका का प्रशिक्षण दिलाया। ज बवह इस स्कूल की अध्यापिका नियुक्ति हुई तब उनकी उम्र 17 साल थी। सावित्रीबाई फुले ने अध्यापन के साथ–साथ स्वयं भी अध्ययन जारी रखा।

ज्योतिबा का विश्वास था कि केवल स्कूली शिक्षा से कुछ बदलने वाला नहीं है इससे ज्यादा लोगों को शिक्षित नहीं किया जा सकता। उनका मानना था कि सभी शिक्षित स्त्री –पुरूष का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह दूसरों को शिक्षा दे। ज्योतिबा फुले स्त्रियों की स्थिति से पूर्ण रूप से अवगत थे उन्हें पता था कि समाज में शिक्षा के बिना उनको उचित स्थन नहीं दिलवाया जा सकता। फुले के समय निम्न वर्गों के लिए शिक्षा दिन में स्वप्न के समान था।

शिक्षा ही ऐसा दीपक है जो उन्हें इस अंधकार से बाहर निकाल सकता है। उन्होंने कहा कि ब्राह्मणों द्वारा फैलाये गए अंधविश्वासों और रूढ़िवादी को केवल तार्किक ही झुठला सकती थी। रूढ़िवादी लोगों ने समाज में लड़कियों को स्कूल भेजने वाले लोगों को डराया–धमकाया और कहा कि शिक्षित नारी दुष्ट अमर्यादित और विवेकहीन हो जाएगी तथा वे परिवार के नियमों का पालन नहीं करेगी। इसी कारण जब सावित्रीबाई घर से निकलती थी तो ब्राह्मणों के बच्चे उन पर गोबर और थूक फैंकते थे फिर भी वह कुछ नहीं बोलती थी और अपने थैले में एक साड़ी रखती थी जो स्कूल पहुंचकर बदलती थी फिर कन्याओं को पढ़ाती थी। ब्राह्मणों को उनका यह कार्य बिल्कुल भी ठीक नहीं लग नहीं लग रहा था इसलिए गाँव की ब्रह्मदेव मूण्डली ने उनके घर जाकर उनके मॉ–पिता को भड़काने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि अपनी बहु को कुमार्गी होने से रोक लो। तुम्हारे घर की इज्जत बाहर जा रही है जो हमें बिल्कुल अच्छा नहीं लगता और तो और उन्होंने फुले की हत्या तक का षडयंत्र तक रच डाला। ब्राह्मणों के अलावा शुद्र जाति के लोग भी स्त्री शिक्षा के पक्ष में नहीं थे।

जलाया शिक्षा का दीपकः–यह काम आसान नहीं था। अपने अध्ययन –चिंतन से ज्योतिराव फुले के भी गहरी पैठ बन चुकी कुरीतियों की जड़ता से वाकिफ थे। वे समझ चुके थे कि इस पर चौतरफा हमला जारी है। उनकी दृष्टि में इसके मुकाबले के लिए सर्वप्रथम आधुनिक शिक्षा का प्रचार–प्रसार जरूरी था। इस पर उन्होंने अपना ध्यान शिक्षा सुधार पर केन्द्रित किया। वैज्ञानिक और तर्कसंग शिक्षा की कमी को दूर करने के लिए उन्होंने देश में गणित, भौतिक, रसायन, विज्ञान, अंग्रेजी, शिक्षा प्रणाली की शुरूआत की वकालत की थी। इस काम में अंग्रेजों के सहयोग को फुले एक वरदान के रूप में देखते थे। उनको पता था कि स्त्री शिक्षा से ब्राह्मणों का पर्दाफास हो जायेगा तथा ब्राह्मण ग्रन्थकारों की चालाकी बहु–बटियों को पता चल जाएगी।

नारी शिक्षा का प्रसार सर्वप्रथम ज्योतिबा फुले ने ही किया था। उनका मानना था कि अगर इस देश की नारी शिक्षित होगी तो न केवल समाज का विकास होगा बलिक देश भी दिन दुगने रात चोगुने उन्नति करेगा। मुक्ता नामक मातंग कन्या जिसने पहला निबन्ध लिखा जिसमें लड़कियों के सुदृढ़ होते विचारों की झलक मिलती है।

ज्योतिराव फुले द्वारा महिलाओं की शिक्षा के लिए सुझाये गये विचारः–

- ज्योतिराव फुले द्वारा मुफ्त शिक्षा देने का सुझाव।
- 12 वर्ष तक की अनिवार्य शिक्षा दी जानी चाहिए।
- गरीब बच्चों के लिए छात्रवृति व प्रोत्साहन राशि दी जाने का सुझाव
- विद्यालयों में योग्य अध्यापकों की नियुक्ति ।
- शिक्षा को निजी संस्थानों को सोपने के पक्ष में नहीं थे।

निष्कर्षः–

इस प्रकार महात्मा ज्योतिराव फुले ने महिलाओं को शिक्षित बनाने के लिए अथक प्रयास किये तथा उन्हें उनके अधिकार दिलवाये जिनसे उनहें अब तक वंचित रखा गया था। महिलाओं के विकास में ज्योतिराव फुले के द्वारा किये गये इस काम को भारतीय इतिहास में कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनहोंने इस कार्य को अपने घर से शुरू किया और हजारों महिलाओं का उत्थान किया। जिन महिलाओं को आज तक अंधकार में रखा गया था उनको उनके अधिकारों से अवगत करवाया तथा उन्हें अपने अधिकारों की लड़ाई में उनका भरपूर साथ दिया। उनके द्वारा किये गये इस कार्य में उन्हें भारतीय इतिहास में अमर बना दिया।

संदर्भः–

1. एम0पी0 कमल, दलित संघर्ष के महानायक,
2. फुले, ज्योतिराव, गुलाम गिरी, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 1990
3. जगपति, मुरलीधर युगपुरूष महात्मा फुले, महाराष्ट्र शासन, मुम्बई–1993
4. **शाह,** एम0बी0, सामाजिक क्रांति के जनकः महात्मा ज्योतिराव फुले, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली–1998
5. मिश्रा रेखा, विमेन इन मुगल इंडिया
6. गुलाम गिरी, महात्मा फुले समग्र वांड्मय
7. तार्कतिथ, लक्ष्मण जोशी, नेशनल बायोग्राफी ऑफ ज्योतिराव फुले, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 1992
8. मोहन लाल, ज्योतिराव फुले। हिन्दु अंतराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध–पत्रिका 2017